IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लोक संगीत में स्थानीय वाद्य यन्त्रों का साँस्कृतिक महत्व

डॉ. बबली अरुण

असिस्टेंट प्रोफेसर (संगीत विभाग)

कुमारी मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर

सारांश

संगीत एक ऐसी विधा है जिसकी उत्पत्ति कब और कैसे हुई यह कहना संभव नहीं है किंतु इस बात की पुष्टि आवश्यक हो जाती है कि मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ संगीत का विकास निरंतर होता रहा है जिस प्रकार से यदि हम एक बच्चे को चलना व बोलना ना भी सिखाए तब भी वह समय के साथ-साथ चलना व बोलना प्रारंभ कर देता है। ठीक उसी प्रकार संगीत प्रकृति के कण - कण में व्याप्त होने के कारण वह समय के साथ मनुष्य के अंदर स्वयं ही उत्पन्न हुआ जिसके लिए मनुष्य ने संगीत की कोई विशेष शिक्षा नहीं ली। इस प्रकार से उत्पन्न संगीत लोक संगीत की श्रेणी में आया। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली आबादी ने अपने मनोरंजन के साधन स्वयं बनाए उन्होंने वीभिन्न संस्कारों के लिए वीभिन्न प्रकार के गीत बनाए और गाना प्रारंभ किया व उसका साथ देने के लिए वीभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्र बनाए जो की अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रचालित हैं इन्हीं वाद्य यंत्र को स्थानिय वाद्य यंत्र कहा गया इन वाद्य यंत्रों का प्रयोग अत्यंत ही सुंदरता के साथ ग्रामीण अंचलों में निवास करने वाले लोग वीभिन्न अवसरों पर करते हैं।

परिचय

भारत एक ऐसा देश है जहाँ हर राज्य, हर गाँव और हर समुदाय की अपनी अनोखी संस्कृति और संगीत शैली है। यहाँ के लोक वाद्य यंत्र मात्र संगीत के साधन नहीं हैं, ये हमारे समाज की भावनाओं, और जीवनशैली से जुड़े हुए हैं। लोक वाद्य यंत्र हमारे लोकगीतों, नृत्यों, त्योहारों का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। इनकी ध्वनियों में हमारी परंपराओं 'की गूंज सुनाई देती है।

गाँवों में आज भी ढोलक, नगाड़ा, बांसुरी, शहनाई, मंजीरा और इकतारा जैसै यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। ये वाद्य यंत्र जैसे लकड़ी, बांस, मिट्टी, धातु और जानवरों की खाल से बनाए जाते हैं। इस कारण से इनका स्वर एकदम प्राकृतिक और लोकभावना से भरा होता है।

लोक वाद्य यंत्रों की विशेषता यह है की प्रत्येक क्षेत्र का अपना अपना अलग संगीत होता हैजैसै राजस्थान का ढोलक और सरंगी, उत्तर प्रदेश की शहनाई, मध्य प्रदेश की ढपली, बंगाल का इकतारा और पंजाब का ढोल। हर यंत्र अपने अपने क्षेत्र की पहचान और संस्कृतिक को दारशता है।
इनके सुरों में खुशी, दुखु, भक्ति बिरह और प्रेम की सच्ची झलक मिलती है।

आधुनिक समय में जहां एक और इलेक्ट्रॉनिक संगीत का समय चल रहा है वही दूसरी तरफ हमारे लोक वाद्य यंत्र हमें हमारी जड़ों से जोड़े रखते हैं। ये हमें याद दिलाते हैं कि असली संगीत वही है जो लोगों के मन को छू जाए।
प्रत्येक मनुष्य का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम अपने स्थानीय लोक वाद्य यंत्रों को पहचानें, उनके महत्व को समझें और उनके संरक्षण के लए लोगों को प्रेरित करें। इसके लिए सर्वप्रथम हमें यह समझना होगा की लोक वाद्य यंत्र हमारी सांस्कृतिक विरासत के लिए कितना आवश्यक है इन यंत्रों के माध्यम से न केवल संगीत उत्पन्न होता है, बल्कि यह हमारी लोक भावना, परंपरा और एकता को भी व्यक्त करते हैं।

इस परंपरा को जीवित रखने के लिए हमें कुछ बिंदुओं को समझने का प्रयास करना होगा।

1. हमारे क्षेत्र और देश में प्रचलित मुख्य लोक वाद्य यंत्रों की पहचान करना।

2. यह समझने कि ये वाद्य यंत्र किस प्रकार आजा बनाए जाते हैं, इनमें कौन-कौन सी सामग्री का उपयोग होता है।

3. यह जानने का प्रयास करना कि इन वाद्यों का प्रयोग किन-किन अवसरों पर और किस उद्देश्य के लिए किया जाता है जैसे शादी, त्योहार, भजन, या लोकनाट्य में।

4. यह जानकारी प्राप्त करना कि लोक वाद्य यंत्र हमारे साँस्कृतिक जीवन, परंपराओं और लोकगीतों से किस प्रकार से जुडे हुए हैं।

5. स्थानीय कलाकारों और कारीगरों के महत्वपूर्ण योगदान को पहचानना और उनको प्रोत्साहित करते हुए उनके संरक्षण के लिए प्रयास करना।

6. आज के इस आधुनिक युग में भी इन पारंपरिक यंत्रों का सांगीतिक और साँस्कृतिक महत्व बनाए रखने के तरीकों का प्रचार करना।

7. लोगों में यह जागरूकता पैदा करना कि लोक वाद्य यंत्र केवल पुराने ज़माने की चीज़ नहीं है बल्कि हमारी हमारे जीवन की मुख्य साँस्कृतिक धरोहर हैं।

मुख्यता हमारा उद्देश्य यह है कि अपने स्थानीय लोक वाद्य यंत्रों के इतिहास, इनके नामकरण, उपयोग और साँस्कृतिक महत्व को जानें, समझें और आगे आने वाली पीढ़ीऔ तक पहुंचा सकें।

हम केवल पुस्तकों और इंटरनेट पर निर्भर ना रहते हुऐ स्थानिय लोगों से वार्तालाप करके लोग संस्कृति के इन वाद्य यंत्रों का हम प्रचार प्रसार कर सकते हैं व अत्यंत जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।

1. स्थानीय कलाकारों से बातचीत -

अपने क्षेत्र के कुछ लोक कलाकारों, ढोलक वादकों और भजन गायकों से बातचीत करे।
उनसे जानकारी प्राप्त करें की वे कौन से वाद्य यंत्र बजाते हैं, उन्हें कैसे बनाते हैं, और किन अवसरों पर उनका उपयोग करते हैं।

इन चर्चाओं से हमें वाद्य यंत्रों की व्यवहारिक और साँस्कृतिक जानकारी प्राप्त होगी व इन लोक वाद्य कलाकारों का इसे जुड़ाव भी पता चलेगा।
हममें से कई लोगों ने लोक कलाकारों को उनके वाद्य यंत्रों के साथ प्रदर्शन करते हुए देखा होगा
इससे हमें यह समझ आता है कि इन यंत्रों का उपयोग किस तरह किया जाता है और ये लोक जीवन का अभिन्न हिस्सा कैसे हैं।

3. साहित्यिक अध्ययन -

लोक संगीत और भारतीय वाद्य यंत्रों से जुड़ी हुई कुछ अच्छी पुस्तकों का हमें अध्ययन करना चाहिए क्योंकि विभिन्न लेखकों के विशेष अनुभवों पर लिखी गई यह पुस्तक हमें विशेष जानकारी प्रदान करती हैं।

इनसे हमें अलग-अलग राज्यों में प्रचलत वाद्यों की जानकारी, उनकी संरचना और इतिहास के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त होती है।

4. ऑनलाइन स्रोतों का उपयोग -

इंटरनेट के माध्यम से व विभिन्न वेबसाइटों, के माध्यम से भी हमें लोक संगीत की अच्छी जानकारी प्राप्त हो जाती है ।इससे हमें वाद्य यंत्रों की जानकारी मिलती है जिन्हें हमने अपने वास्तविक जीवन में कभी नहीं देखा होता है।

5. चित्रों का संग्रह -

जहाँ भी संभव हो वहाँ हमें लोक वाद्य यंत्रों की तस्वीरें लेनी चाहिए जिससे उनका प्रदर्शन किया जा सके। इस तरह अलग-अलग स्रोतों से जानकारी एकत्र करके हमें इस विषय को गहराई से समझने और सही रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए।

हमारे स्थानीय लोक वाघ यंत्र

भारत में हर राज्य और हर क्षेत्र के अपने अलग-अलग लोक वाद्य यंत्र हैं, जिनकी ध्वनियों में उस क्षेत्र की संस्कृति, बोली और परंपरा की झलक मिलती है।

ये यंत्र स्थानीय कारीगरों द्वारा प्राकृतिक वस्तुओं से बनाए जाते हैं, जैसे आम की लकड़ी शीशाम व नीम की लकड़ी, बांस, मिट्टी, धातु, नारियल का खोल, कद्दू और जानवरों की खाल।
इनका प्रयोग बहुत साधारण तरीके से किया जाता है, लेकिन इनकी आवाज़ में गहराई और आत्मीयता होती है।

प्रमुख स्थानीय वाद्य यंत्र

(1) ढोलक

ढोलक सबसे लोकप्रिय लोक वाद्य यंत्रों में से एक है।
खुशी के हर मौके पर इसका प्रयोग भारतीय परंपरा में अत्यंत ही शुभ माना जाता है।

यह लकड़ी के खोखले हिस्से पर दोनों ओर से चमड़ा कसकर बनाई जाती है।

इसे दोनों हाथों से बजाया जाता है और इसका उपयोग विवाह, नाच-गाने, होली, कीर्तन और लोकनाट्य इत्यादि में होता है।

ढोलक की थाप किसी भी गीत या नृत्य को जोश और लय से भर देती है।
ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी यह हर उत्सव का प्रमुख हिस्सा है।

(2) बांसुरी

बांसुरी बांस से बनी एक मधुर वाद्य यंत्र है। इसे फूंक मारकर बजाया जाता है और इसमें बने छेदों से स्वर निकाले जाते हैं। यह प्रेम, शांति और सादगी का प्रतीक मानी जाती है।
ग्रामीण इलाकों में चरवाहे इसे बजाते हैं, हिंदू धर्म में भगवान श्री कृष्णा से भी बांसुरी को जोड़ा गया है जिससे इस वाद्य यंत्र को बहुत ज्यादा प्रचार और प्रसार मिला। बांसुरी की ध्वनि हृदय को बहुत शांति प्रदान करती है।

(3) शहनाई

शहनाई लकड़ी या धातु की बनी लंबा वाद्य है, जिसकी ध्वनि बहुत मीठी और पवित्र होती है। यह शुभ अवसरों, जैसे शादी, पूजा, त्यौहार, जेसे शुभ अवसरों पर बजाई जाती है।
शहनाई का प्रयोग मृत्यु जैसी स्थितियों में नहीं किया जाता है वहां पर इसे पूर्ण रूप से निषेध माना गया है।
शहनाई की आवाज़ सुनुकर लोगों के मन में मंगल और खुशी की भावना आती है। यह भारतीय पारंपरिक संगीत का महत्वपूर्ण भाग मानी जाती है।

(4) ढपली

ढपली एक गोलाकार वाद्य है, जो लकड़ी या लोहे के घेरे पर चमड़ा कसकर बनाई जाती है। इसे एक हाथ से थामकर दूसरे हाथ से प्रहार करके बजाया जाता है। यह कीर्तन लोकगीत और नृत्य में ताल और लय देने के काम आती है। ढपली की झंकार से माहौल में उत्साह और भक्ति का भाव पैदा होता है। वीर रस की उत्पत्ति में यह अत्यंत सहायक होती है।

(5) इकतारा

इकतारा एक बहुत सरल एवं प्रभावशाली वाद्य यंत्र है। इसमें एक तार होता है, जो लकड़ी या नारियल के खोल पर बांधा जाता है। इसे ज्यादातर भजन गायक, फकीर और लोककथाकार बजाते हैं। इसका प्रयोग सूफियाना गायकी में भी किया जाता है इसकी ध्वनि में एक अलग ही आत्मीयता होती है, इसीलिए लोक कथाकार जब रात भर जाकर कथाएं गाते हैं तो एक तारा का बहुतायत में प्रयोग होता है जो सीधे हृदय को छू जाती है।

(6) नगाड़ा

नगाड़ा बड़ा ड्रम जैसा वाद्य होता है, जो धातु या मिट्टी से बना होता है। इसे लकड़ी के डंडों से बजाया जाता है। नगाड़े की तेज़ आवाज़ से उत्सव, जुलूस या युद्ध की शुरुआत का संकेत दिया जाता था। प्राचीन समय में जब सेनाएं युद्ध के लिए कूच करती थी तब नगाड़े की ध्वनि से ही उनका उत्साहवर्धन किया जाता था। यह वाद्य यंत्र शक्ति , साहस और उत्साह का प्रतीक माना जाता है।

(7) तुरुही या रण संघा

तुरुही एक लंबी नली के आकार की वाद्य होती है, जो तांबे या पीतल से बनाई जाती है। इसे फूंक मारकर बजाया जाता है और इसकी आवाज़ बहुत दूर तक जाती है। इसीलिए प्राचीन काल में इसका उपयोग युद्ध की घोषणा या भव्य समारोह में किया जाता था। आज भी गाँवों में शादियों व जुलूसों में इसे बजाया जाता है।

(8) मंजीरा

मंजीरा पीतल से बने दो छोटी गोल फैली कटोरी के आकार को सुतली या मोटी डोरी में बांधकर जिन्हें टकराकर बजाया जाता है। यह छोटा लेकिन बहुत मधुर वाद्य है, जो भजन, आरती और लोकनृत्य में लय प्रदान करता है इसकी झंकार वातावरण को भक्तिमय बना देती है। पूजा के स्थलों पर इसका बहुतायत से प्रयोग करते करते हुए देखा जा सकता है क्योंकि मजीरे हाथ में आते ही एक धारणा बनी हुई है कि अब ईश्वर का गुणगान होना है।
इस तरह देखा जाए तो हमारे स्थानीय लोक वाद्य यंत्र केवल संगीत के साधन नहीं, बल्कि हमारी लोकपहचान, परंपरा और संस्कृति के जीवंत प्रतीक हैं। जो समाज को एकजुट होने में अपनी पारंपरिक भूमिका निभाते हैं।

साँस्कृतिक महत्व-

लोकवाद्य यंत्र हमारे भारतीय समाज की आत्मा और हमारी सांस्कृतिक विरासत हैं।
इनके सुरों में न केवल संगीत की मधुरता होती है, बल्कि हमारी जीवंत, परंपराओं और भावनाओं की सच्ची झलक भी मिलती है। हर क्षेत्र के वाद्य यंत्र वहाँ की लोककला, लोकगीत और लोकनृत्य की अमित छाप लिए हुए मिलते हैं वह वहां की साँस्कृतिक धरोहर की गहराई से जुड़े हुए होते हैं।
ग्रामीण क्षेत्रों में जब कोई त्योहार, शादी या अनुष्ठान होता है, तो सबसे पहले इन वाद्य यंत्रों की आवाज़ सुनाई देती है। ढोलक की थाप, मंजीरे की झंकार और शहनाई की मधुर ध्वनि से पूरे माहौल में खुशियों का माहौल छा जाता है।
यह वाद्य यंत्र लोगों को एक साथ जोड़ते हुए एकजुट होकर कार्य करने का भी संदेश देते हैं। जिससे समाज में भाईचारा, एकता का भाव मजबूत होता है।
लोक वाद्य यंत्रों के माध्यम से हमारे पूर्वजों की दी हुई परंपराएँ और संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती हैं।

ये वाद्य यंत्र न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि अपना एक आध्यात्मक महत्व भी रखते हैं।
उदाहरणार्थ-
शहनाई को शुभ अवसरों का प्रतीक माना जाता है, तो बांसुरी से भगवान श्रीकृष्ण से जोड़ा गया है ।ढोलक और नगाड़े से त्योहारों का जोश बढ़ता है,तो इकतारा भक्ति भाव को जागृत करता है।
इन यंत्रों की खास बात यह है इन्हें सीखने के लिए कोई विशेष शिक्षा की आवश्यकता भी नहीं होती है क्षेत्रीय लोग इन्हें अपने हाथों से बनाते और बजाते हैं, और उनकी कला पीढ़ी दर पीढ़ी चलती चली जाती है।

इससे न केवल रोजगार मिलता है बल्कि लोककला को संरक्षण भी मिलता है।
आधुनिक समय में जहाँ इलेक्ट्रॉनिक संगीत तेजी से लोकप्रिय हो रहा है, वहीं लोक वाद्य यंत्र हमें हमारी जड़ों और परंपराओं से जोड़े हुए हैं। इनकी आवाज हमें यह याद दिलाती है कि वास्तविक संगीत वह है जो सीधा हृदय पर प्रहार करें। इसीलिए इस कला का संरक्षण करना हमारी मौलिक जिम्मेदारी है।
अगर हम इन वाद्यों को जीवित रखेंगे, तो हमारी संस्कृति, लोकगीत और लोकनृत्य को भी हम जीवित रखने में सफल हो पाएंगे।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि लोक वाद्य यंत्र केवल संगीत के उपकरण नहीं हैं, बल्कि वे हमारे समाज की आवाज़, परंपरा और साँस्कृतिक धरोहर व पहचान हैं।
स्थानीय लोक वाद्य यंत्र हमारे समाज, संस्कृति और परंपराओं के जीवंत प्रतीक हैं। इनके बिना हमारी संस्कृति हमारी पहचान अधूरी लगती है।
इन यंत्रों की ध्वनि संगीत नहीं है, बल्कि यह लोक जीवन की आत्मा और भावनाओं की भाषा है।

लोक वाद्य यंत्रों की विशेषता यह है कि ये प्राकृतिक संसाधनों और स्थानीय कारीगरों के द्वारा बनाए जाते हैं।

लकड़ी, मिट्टी, चमड़ा, धातु और बॉस जैसे साधारण संसाधनों से बनने वाले ये यंत्र हमें सादगी, पर्यावरण से जुड़ाव और आत्मनिर्भरता का संदेश देते हैं।

इन वाद्य यंत्रों को बनाने और बजाने की परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है, हमारी प्रकृति भी इन वाद्य यंत्रों को संरक्षित करती चली आ रही है जो हमारी अमूल्य साँस्कृतिक धरोहर है।

आज के वर्तमान युग में जहाँ पाश्चात्य संगीत और विदेशी वाद्य यंत्रों का प्रभाव बढ़ रहा है, वहाँ यह और भी ज़रूरी हो जाता है क हम अपने लोक वाद्य यंत्रों की पहचान और इसके सम्मान को बनाए रखें।

यदि इन्हें भुला दिया गया, तो केवल संगीत ही नहीं, बल्कि हमारी लोक संस्कृति की परंपरा और लोकजीवन की खुशबू भी धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगी।

इसलिए हमें निरंतर यह प्रयास करते रहना होगा की हम इन यंत्रों को न केवल सहेजकर रखें, बल्कि नवयुवाओं को इनके प्रति जागरूक करें, जिससे आने वाली पीढ़िया हमारी इस समृद्ध परंपरा को जानें और आगे बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

लोक वाद्य यंत्रों के माध्यम से हम अपने अतीत से जुड़ते हैं और अपनी पहचान को सशक्त बनाते हैं।

अंतं में यह कहा जा सकता है कि

"लोक वाद्य यंत्र केवल सुरों का माध्यम नहीं, अपितु हमारे समाज की अंतरात्मा की आवाज़ हैं।"

संदर्भ :

1. भारतीय संगीत का इ तहास डॉ० शरदचंदं श्रीधर परंजय ।

2. भारतीय शास्त्रीय संगीत में लहरा वादन, डॉ० मोहनलाल ।

3. लोक संगीत में प्रयुकुत वाद्य यंत्र, सु मत चक्रवत ।

4. तबला एक समात वाद्य, स्वतंतर वादन एवं संगत, डॉ० सीमा चौधरी।

5. भारतीय संगीत वाद्य डॉ० लालम ण ।

6. भारतीय संगीत और वैश्वीकरण डॉ० कु० आकांक्षी।

7. राग प रचय भाग 3, ह रश्चंदर श्रीवास्तव।